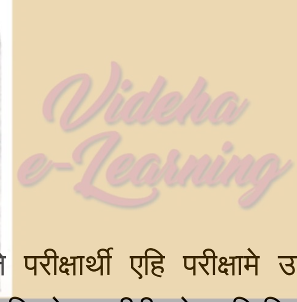
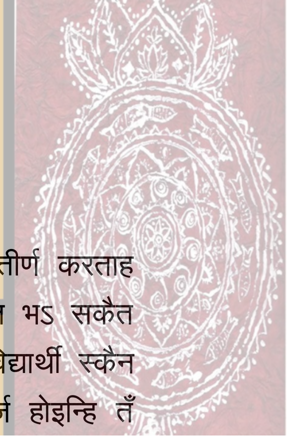





यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा २०२० सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- **गजेन्द्र ठाकुर**

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, २०२० मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज-२

मैथिली साहित्य **प्रश्न-पत्र-१**

पूर्णाङ्क- २५० समय- तीन घंटा

प्रश्न-पत्र विषयक विशेष निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ

एतय दू खण्ड (सेक्शन) मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि।

प्रश्न संख्या १ तथा प्रश्न संख्या ५ अनिवार्य अछि। शेष प्रश्नमेसँ तीन प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (सेक्शन) सँ कम-सँ-कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि।

प्रश्न/ खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि।

उत्तर मैथिलीमे लिखब अनिवार्य अछि।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत। यदि काटल नहि गेल हो, तँ अंशतः लिखित उत्तरोकेँ गणना कयल जायत। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी।






सेक्शन-ए

१. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग १५० शब्दधरि): (१०*५=५०)
(ए) मैथिली एवं ओड़ियाक पारस्परिक सम्बन्ध
(बी) मैथिली भाषाक प्रमुख बोली
(सी) मैथिली क्रियाक भाव-भेद
(डी) अवहट्टक ऐतिहासिक स्वरूप-विवेचन
(ई)प्राकृत भाषा ओ अर्धमागधी

२. (ए) पूर्वाञ्चलक भाषाक सन्दर्भमे मैथिली ओ ओड़ियाक साम्यक ओ वैषम्यक विश्लेषण करू। (२०)

(बी) मैथिली भाषाक विकास-क्रमक समीक्षा करू। (१५)

(सी) मध्यकालीन मैथिली भाषाक स्वरूप पर विचार करू। (१५)

३. (ए) मैथिलीक कोनो पाँच गोट बोलीक उदाहरण-सहित परिचय दिअ। (२०)

(बी) भाषोत्पत्तिक प्रमुख सिद्धान्तक विवेचन करू। (१५)

(सी) बोली कोन-कोन परिस्थितिमे भाषाक रूप ग्रहण करैत अछि? (१५)

४. (ए) भाषा परिवर्तनशील अछि, एकर कारण पर प्रकाश दिअ। (२०)

(बी) विद्यापति मध्यकालीन मैथिली भाषाक स्वरूपक आधार स्तम्भ छथि, विचार करू। (१५)

(सी) व्याकरणक दृष्टिसँ मैथिली भाषाक विशेषताक मूल्यांकन करू। (१५)

सेक्शन- बी

५. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग १५० शब्दधरि): (१०*५=५०)
(ए) रामविजय
(बी) वैदेही
(सी) वर्णरत्नाकरक महत्व
(डी) कवीश्वर चन्दा झा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक विवेचन करू।
(ई) प्रबन्ध काव्यक औचित्य

६. (ए) देसिल वयनाक कवि विद्यापति मात्र मिथिले धरि सीमित नहि रहथि- सयुक्ति प्रतिपादित करू। (२०)

(बी) मैथिली साहित्यक काल-विभाजनक प्रसंग विद्वान लोकनिक मतक समीक्षा करू। (१५)






(सी) मैथिलीक प्रमुख समालोचना साहित्यसँ परिचय कराउ। (१५)

७. (ए) मैथिली साहित्यक विकासमे अभिनन्दन ग्रन्थक योगदान देखाउ। (२०)

(बी) विद्यापतिक परम्परासँ की तात्पर्य? विवेचन करू। (१५)

(सी) आदिकालीन मैथिली साहित्यक अध्ययन सामग्रीपर प्रकाश दिअ। (१५)

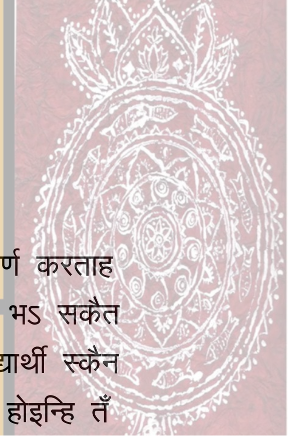
८. (ए) आधुनिक मैथिली साहित्यक निर्माणमे कवीश्वर चन्दा झाक सेवाक मूल्यांकन करू। (२०)

(बी) मैथिलीक मुक्तक काव्यक विकाससँ परिचय कराउ। (१५)

(सी) मैथिली उपन्यास साहित्यक यात्राक्रम पर निबन्ध लिखू (१५)







यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा २०२० सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- गजेन्द्र ठाकुर

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, २०२० मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज-२

मैथिली साहित्य **प्रश्न-पत्र-२**

अधिकतम अंक- २५० समय- तीन घंटे

प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लिअ:

एतय दू खण्ड (सेक्शन) मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि।

प्रश्न संख्या १ तथा प्रश्न संख्या ५ अनिवार्य अछि। शेष प्रश्नमेसँ तीन प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (सेक्शन) सँ कमसँ कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि।

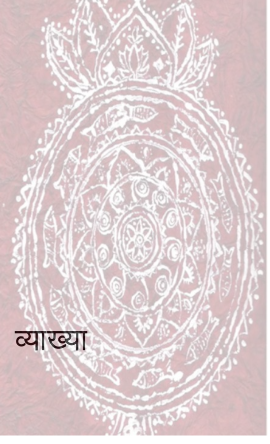
प्रश्न/ खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत। यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशतः लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी।



सेक्शन-ए

१. प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि। काव्य वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहए। (उत्तर अधिकतम १५० शब्दमे दातव्य) (१०*५=५०)

(ए) मालति सफल जीवन तोर

तोरे विरहे भूवन भमए

भेल मधुकर भोर॥

जातकि केतकि कत न अछ

कुसुमरस समान।

सपनहु नहि काहू निहारए

मधु कि करत पान॥

जकर हृदय जतए रहल

धसि पए ततहि जाए।

जअओ जतने बान्धि निरोधिअ

निमन नीर समाए॥

(बी) पाबि पराभव जे बैसथि कर जोड़ि

करइत अपन सहन शक्तिक व्यवहार

पौरुष तनिक सिरजि बहुविधसन्ताप

होइछव्यर्थ यथा यौवन विधवाक

(सी)अनल अनिल बम मलअज बीख

जे छल सीतल से भेल तीख॥

चान्द सन्ताबए सविताहु जीनि

नहि जीवन एकमत भेल तीनि॥

किछु उपचार नमानए आने







एहि बेआधि अथिक पचवान॥

(डी) हा रघुनाथ अनाथ जकाँ दशकन्धपुरी हम आइलि छी।

सिंहक त्रास महावनमे हिरिणीकसमान डराइलि छी।

चन्द्र चकोरि अहिंक सदा हम शोक समुद्र समाइलि छी।

देवर दोष कहू हम की अपना अपराधसँ काइलि छी॥

(ई) क्षत्रिय पुत्ति वीर पत्नी कुलनारि निर्भय भए हम जाइत छी कीचक गेह।

जे विभु कौरव सभ मध्य मम लाज राखल, जे प्रभु कएलन्हि ओहि विधि त्राण सिन्धुराजसँ

से विभु निश्चय आज भए सहाय रखताह धर्म अक्षुण्ण।

२. (ए) ‘‘खट्टर कका स्वच्छन्द चिन्तन ओ बुद्धि विलासक प्रतीक थिकाह’’- एहि कथनकेँ पल्लवित करू। (२०)

(बी) ‘‘जिबैत रहब पहिने जरूरी छैक संसारमे। तखन लोक लाज। नीक बेजाय।’’- एहि उक्तिक आलोकमे ‘‘पृथ्वीपुत्र’’ उपन्यासक मूल्यांकन करू। (१५)

(सी) ‘‘एहि प्रबुद्ध युगमे कोन प्रकारक कवि चाही? एहि प्रश्नक उत्तर यात्रीक चित्रामे संकलित कवितासभ दैत अछि।’’- एहि कथनक समीक्षा करू। (१५)

३. (ए) मिथिलांचलक मध्यमवर्गक अभिजात्य छद्मक विद्रूप राजकमलक कथाक मूलतत्त्व कहल जा सकैत अछि- विवेचन करू। (२०)

(बी) लालदासक ’रमेश्वर चरित मिथिला रामायण’क नामकरण पर विचार करू। (१५)

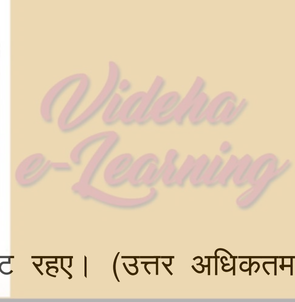
(सी) काव्य-वैशिष्ट्यक दृष्टिएँ ’दत्तवती’ महाकाव्यक प्रथम सर्गक मूल्यांकन करू। (१५)

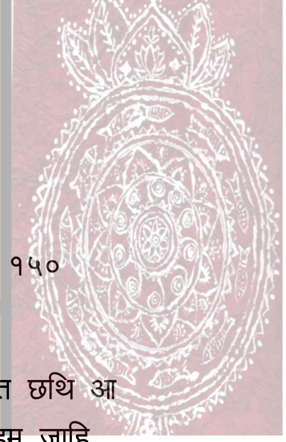
४. (ए) ’चित्रा’क नामकरणक सार्थकता पर विचार करू। (२०)

(बी) तन्त्रनाथ झा द्वारा रचित ’कीचक-वध’ महाकाव्यक आधार पर एहि उक्तिक समीक्षा करू। (१५)

(सी) ‘‘रसना रोचन श्रवण-विलास, रचइ रुचिर पद गोविन्ददास॥’’ एहि पंक्तिक आलोकमे गोविन्ददासक काव्य-सौन्दर्यक निरूपण करू। (१५)

सेक्शन- बी



५. निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहए। (उत्तर अधिकतम १५० शब्दमे दातव्य) (१०*५=५०)

(ए) ओ छथि पुरान लोक... पुरान मान्यतामे जिनिहार। ओ नोकरीकेँ प्रतिष्ठाक काज बुझैत छथि आ बनियाक काजकेँ नीच कर्म मानै छथि। हुनकर मान्यता पर हम किए आघात करियनि। हम जाहि संसारमे जीवि रहल छी, अपन अस्तित्वक लेल जेहन संघर्ष हमरा लोकनिकेँ करऽ पड़ि रहल अछि ताहिसँ ओ अपरिचित छथि। ओ अपन संसारमे रहथु, अपन संसारक आगिसँ हुनका किए झरकबियनु।

(बी) सुकर्म आ अपकर्म ककरा कहै छै से बुझबाक बुद्धि जँ अहाँमे रहैत तँ आइ अहाँकेँ हमरासँ वा हमर ऐ स्टालसँ घृणा नै होइत। एके टोकारा पर अहाँ लगले हमरा लग दौड़ल अबितौं... पुछितौं जे हमर व्यवसाय घाटामे चलि रहल अछि कि नफामे। अहाँ से कयलौं नै आ तँ हम कहब जे अहाँ ने केवल समाजक, ने केवल आश्रमक वा परिवारक, अपितु अहाँ अपनो लेल भारेटा छी।

(सी) भाइ, हम-अहाँ ओहि नजरिये देखबाक अभ्यस्त भऽ गेल छी। आइ समस्त मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवीक इएह हाल छै। कमायवला एक गोट, खायवला दस। इएह ''पैरासिटिज्म'' हमरा लोकनिक एहि दलित अवस्थाक कारण अछि। हाजार गुणे हमरासँ नीक एखन अहाँक श्रमजीवी अछि। से नै, अपने डेरामे जे दाइ काज करै अछि तकरे देखियौ, तीनू सासु-पुतोहु तीन डेराक काज धयने अछि... तीस टाका महीना आ तीन थारी भात नित्त।

(डी) पताल अइसन दुःप्रवेश स्त्रीक चरित्र अइसन दर्भ कालिन्दीक कल्ल्लोल अइसन मासल काजरक पर्व्वत अइसन पापक सहोदर अइसन शरीर आतइक नगर अइसन भयानक कुमन्त्र अइसन निष्फल अज्ञान अइसन सर्व्वतोगामी अहङ्कार। अहंकार। अइसन उन्नत परद्रोह अइसन अभव्य पाप अइसन मलिन एवम्विध दुःसश्चर दृष्टिबन्धक भयानक गम्भीर शूचीभेद्य अन्धकार देपु

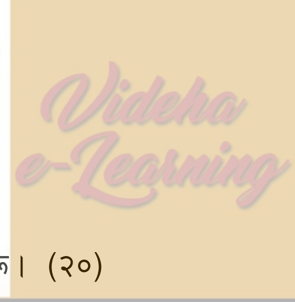
(ई) केहन मुखश्री। केहन सरल निश्छल आँखि! हृदयक गूढ़तम भाग एहि आँखिक द्वारा देखि सकैत छी। मुदा ई सरलता, ई निश्छलता रहत कतेकदिन? एखन यौवनमे प्रवेश मात्र भऽ रहल अछि। नव आशा अछि नव विश्वास। संसारक अनुभव बाँकी अछि तँ। आ, एकर बाद? नीक बरक अभाव, अतिशय मूल्य... कतऽ ई कान्ति, ई स्वर्णीय लावण्य। पीयर देह, आँखि धसल, मलिन मुखमण्डल... ।

६. (ए) सामाजिक जीवन पर आधारित ''आम खयबाक मुँह'' सरसताक दृष्टिएँ एक सफल कथा थिक- स्पष्ट करू। (२०)

(बी) ''खट्टर काकाक तरंग''मे हरिमोहन झा उनटे गंगा बहा देने छथिइ- एहि उक्तिक आलोकमे एकर विशेषता देखाउ। (१५)

(सी) ''भफाइत चाहक जिनगी''मे लेखकक की अभिप्राय छन्हि- युक्तियुक्त विवेचन करू। (१५)







७. (ए) मैथिली साहित्यमे राजकमल चौधरीक योगदानक चर्चा करू। (२०)

(बी) मैथिली साहित्यक विकासमे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'कयोगदानक मूल्यांकन करू। (१५)

(सी) पठित अंशक आधार पर कतोक समीक्षक द्वारा ‘‘वर्ण रत्नाकर’’कें ‘‘वर्णन रत्नाकर’’ कहबाक औचित्यक समीक्षा करू। (१५)

८. (ए) लोकगाथा पर आधारित उपन्यास रचनाक पृष्ठभूमिसँ मणिपद्मक विशेष रचना-दृष्टि रहल अछि। लोरिक विजय उपन्यासक आधार पर प्रमाणित करू । (२०)

(बी) ‘‘शेखर जीक नाटक मैथिली रंगमंचकेँ एकटा नवदिशा देलक, ओकरा ठमकल गतिसँ उबारि गतिशील कयलक आ नाटककार तथा निर्देशकक बीचक दूरीकेँ कम करबामे सफल भेल’’- एहि वाक्यांशक संदर्भमे ‘‘भफाइत चाहक जिनगी’’ नाटकक समीक्षा करू। (१५)

(सी) ‘‘हरिमोहन झा व्यंग्यकेँ विधाक मान्यता प्रदान करबैत दार्शनिक चिन्तनक संगहि लेखकीय पांडित्यक परिचय देबामे पूर्ण सफल भेल छथि।’’- ‘‘खट्टर ककाक तरंग’’क आलोकमे एहि कथन पर विचार करू। (१५)